RNI/MPHIN/2013/61414

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC Care Listed

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

एकादश वर्ष, षष्ठ अंक

जनवरी-फरवरी 2023



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

Bharatiya Jyotisham
प्रवर्तते भास्वतः लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	जीवन मूल्य : एक समाजशास्त्रीय अवलोकन	प्रो. अमिता सिंह	05
2.	गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के काव्य-दर्शन में आध्यात्मिक मुक्ति	डॉ. रणजीत कुमार तिवारी	10
3.	ग्रामीण विकास में पंचायती राज की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. मिथिलेश कुमार	14
4.	आचार्य विनोबा भावे की ग्रामीण विकास की भारतीय दृष्टि	डॉ. के. बालराजु, गौरव कुमार	19
5.	यज्ञ में नारी-अधिकार : एक विमर्श	मधुस्मिता डेका	24
6.	प्राथमिक स्तर के बालकों में पठन आदत : एक सूक्ष्म विश्लेषण	डॉ. विरेन्द्र कुमार, डॉ. मनोज कुमार सिंह	28
7.	तुलसीकृत रामचरितमानस में निहित शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन	प्रो. चंद्रशेखर वझलवार, नवीन कुमार चौबे	32
8.	योगदर्शन में वर्णित शारीरिक व मानसिक समस्याओं का समाधान	डॉ. सुषमा नारा	36
9.	ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	प्रो. आलोक कुमार कश्यप, महेन्द्र कुमार	39
10.	21 वीं शती के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण स्त्री का आर्थिक शोषण और स्त्री मुक्ति का प्रश्न	डॉ. सत्य प्रकाश पाल, बेबी विश्वकर्मा	43
11.	वेद निरूपित पर्यावरण	डॉ. कुलदीप कुमार, चमन लाल	46
12.	स्वदेश दीपक के नाटक 'कोर्ट मार्शल' में सामाजिक चेतना	डॉ. सुमन राठी, छोटी बाई	49
13.	नई शिक्षा नीति 2020 में मिश्रित अधिगम	दिनेश कुमार	54
14.	भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव	संजय कुमार वर्मा	57
15.	समाज कार्य दर्शन का भारतीय परिप्रेक्ष्य	डॉ. श्याम सिंह	60
16.	वीतराग मूर्ति तीर्थंकर महावीर जीवनदर्शन	डॉ. योगेश कुमार जैन	67
17.	उपनिषद् साहित्य में भक्तितत्त्व विमर्श	डॉ. रिपन कुमार	74
18.	बी.एड. प्रशिक्षुओं का अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण एवं विचारों का अध्ययन	संगीता, डॉ. सुनीता गोदियाल, डॉ. कौशल किशोर विज्लवाण	78
19.	विनोबा दर्शन के आयाम	डॉ. शंभू जोशी	83
20.	भारतीय चिन्तन परम्परा में ज्ञान का स्वरूप	डॉ.कालिका प्रसाद शुक्ल	87

ISSN 2278 - 0327

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के काव्य-दर्शन में आध्यात्मिक मुक्ति

डॉ. रणजीत कुमार तिवारी
सह-आचार्य एवं अध्यक्ष
पारम्परिक संस्कृत विभाग
कुमार भास्कर वर्म संस्कृत पुरातन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबारी, असम

मानव जीवन का परम उद्देश्य पुरुषार्थ की प्राप्ति है। पुरुषार्थ चार प्रकार का होता है- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।[1] ये चार प्रकार के पुरुषार्थ मानव जीवन के सांसारिक अस्तित्व के रूप हैं, जिनमें से अन्तिम मोक्ष तब प्राप्त होता है जब पहले तीन धर्म, अर्थ और काम से पूर्ण संतुष्टि प्राप्त होती है। फिर, शास्त्र सिखाते हैं कि उक्त धर्म, अर्थ और काम का अभ्यास निष्पक्ष, स्वच्छ और शुद्ध मन से किया जाना चाहिए, इनमें केवल आसक्ति ही निम्नतम है। किन्हीं दो की साधना मध्य है और तीनों की एक साथ श्रद्धा-भक्ति के साथ कर्तव्याकर्तव्य विवेक से युक्त साधना सर्वोच्च है-ऐसा विद्वानों का मत है। जैसा कि महाभारत में कहा गया - धर्म, अर्थ और काम का समान रूप से सेवन करना चाहिए, और जो मनुष्य ऐसा करने में आसक्त नहीं है, वह हीन है। वे कहते हैं कि दोनों का सेवन करने वाला मध्य एवं कुशल है और वह श्रेष्ठ है जो तीनों वर्गों में लगा हुआ है।[2] मुक्ति या मोक्ष लगभग सभी दर्शनों या वेदान्त में विचार का एक महत्वपूर्ण विषय है। हम जानते हैं कि भारतीय दर्शन सांसारिक बंधनों से मुक्ति का दर्शन है। भारतीय दार्शनिकों की स्पष्ट समझ और विश्वास है कि व्यक्तिगत आत्मा के लिए निर्धारित कर्तव्यों का निर्भीक प्रदर्शन दु:ख, मृत्यु और संसार के त्रिविध महासागर से मुक्ति की ओर ले जाता है। वास्तव में यही हम भारतीयों की प्रार्थना है- मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।[3] यहाँ मन्त्र के समर्थन में केवल यही बात कही जा सकती है कि भारतीय दार्शनिकों का लक्ष्य मुक्ति है। जिस प्रकार बहने वाली नदियाँ अपना नाम और रूप छोड़कर समुद्र में डूब जाती हैं, उसी प्रकार ज्ञानी, नाम और रूप के पुनर्जन्म से मुक्त होकर, परम पुरुष, परम पुरुष को प्राप्त करता है। जैसा कि मुण्डक उपनिषद में कहा गया है- जिस प्रकार प्रवाहित होती हुई नदियां अपने धाम, समुद्र में पहुँच जाती हैं और अपने नाम तथा रूप को छोड़ देती हैं, उसी प्रकार विद्वान नाम तथा रूप से मुक्त होकर 'परात्पर' 'परम दिव्यपुरुष' को प्राप्त हो जाता है।[4]

परमात्मा का स्थान ऐसा है, जहां निरन्तर अस्तित्व, निरन्तर चेतना, निरन्तर आनन्द राज्य करता है। ब्रह्मानंद की अवस्था में मनुष्य परम आनन्द, परम सुख, चेतना, सभी प्रकार की भावनाओं से मुक्ति और कर्म के तीन रूपों की शून्यता को प्राप्त करता है, लेकिन वह एक ही समय में प्राप्त नहीं होता है, इसके लिए अभ्यास आवश्यक है। जैसा कि भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा- हे अर्जुन ! यह ब्राह्मी स्थिति (ब्रह्म को प्राप्त हुए पुरुष की स्थिति) है, इसको प्राप्त होकर वह कभी मोहित नहीं होता और अन्तकाल में भी इस ब्राह्मी स्थिति में स्थित होकर वह ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो जाता है।[5]

आधुनिक भारत में, बंगाल की भूमि में एक प्रकृति उपासक, कविगुरु गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने पिता महर्षि देवेंद्र नाथ ठाकुर के मार्गदर्शन में वेदों, उपनिषदों, रामायण और महाभारत का अध्ययन किया और एक देशभक्त, आध्यात्मिक गीतकार और कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। उपनिषदों के अध्ययन के प्रभाव से यह कवि विश्वव्यापी पूर्ण आत्म-दृष्टि से काव्य-साधना में प्रवृत्त हो गये। उन्होंने स्वयं अपने आत्म परिचय में कहा है- 'मैं बचपन से ही उपनिषदों का पाठ करता आ रहा हूँ और अपने मन की लौकिक पूर्णता को अपने दृष्टिकोण से स्वीकार करने का अभ्यास करता रहा हूँ।'[6] उनका पूरा परिवार उपनिषदों की छत्रच्छाया में उच्च विचार में विकसित हुआ।[7] उपनयन संस्कार के बाद गायत्री मंत्र के जप के दौरान सर्वत्र परमात्मा का आभास हुआ।[8] उनकी आध्यात्मिक भावनाओं को उनकी कविताओं में, विशेषकर उनके द्वारा उनके गीतों में अभिव्यक्त किया गया है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का मुक्ति का विचार इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त आकाश और वायु में एक ही ध्वनि में परमात्मा का दिव्य स्पर्श सभी कणों में चमकता है। यह रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन की आध्यात्मिक मुक्ति है। उन्होने लिखा है-

आमार मुक्ति आलोय आलोय एई आकाशे,
आमार मुक्ति धूलाय धूलाय घासे घासे।।
विश्वधातार यज्ञशाला आत्महोमे वह्निज्वाला-
जीवन जेन दिई आहुति मुक्ति आशे।।[9]

रवीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय मस्तिष्क की सबसे उत्कृष्ट रचनात्मक प्रतिभाओं में से एक थे और मूल रूप से एक बंगाली भाषी लेखक थे। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में भी अपने कार्यों से भारतीय ज्ञान को भी स्पष्ट रूप से दर्शाया है। वे समकालीन भारतीय साहित्य की दुनिया में भारतीय उपमहाद्वीप के एक प्रसिद्ध लेखक थे। 1913 ईस्वी में